गुरु नानक – सबद १५
मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
मंनै सगल भवण की सुधि ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

सार: स्वीकृति विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जो कल्याण और परिवेश को प्रभावित करती है। यह स्वयं को और सृष्टि को जानने का दृष्टिकोण देती है जो मानवीय अस्तित्व का आधार है।

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
जो स्वीकृति के लाभ को समझते हैं वह ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें अपनाते हैं और उनको आत्मसात कर लेते हैं।

मंनै सगल भवण की सुधि ॥
जो स्वीकृति को अपना लेते हैं वह संपूर्ण सृष्टि के सार से अवगत हो जाते हैं।

मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह विपत्ति और उसके कष्टों से प्रभावित नहीं होते हैं।

मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह मृत्यु या जन्म से नहीं जुड़ते।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पवित्र है।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥
जो लोग स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपनी स्थिति से अवगत रहते हैं। (१३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि स्वीकृति का अर्थ है विचारों के प्रवाह से जुड़े बिना उनको आने और जाने की अनुमति देना।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com